प्रातः क्लास 12-10-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। डबल ओमशान्ति। क्योंकि एक है बाप, दूसरी है दादा की। दोनो की आत्मा है ना। वह है परम आत्मा। यह है आत्मा। वह भी लक्ष्य बतलाते हैं हम परमधाम के रहवासी हैं। दोनो ऐसे कहते हैं। बाप भी कहते हैं ओमशान्ति। यह भी कहते हैं ओमशान्ति। बहुत बच्चे भी बहुते हैं ओमशान्ति। अर्थात हम शान्तिधाम के निवासी हैं। यहां खुलासा होकर बैठना है। अंग अंग से न मिलना है। क्योंकि हरेक की अवस्था में रात दिन का फर्क है। कोई बहुत अच्छा याद करते हैं, कोई बिल्कुल ही याद नहीं करते। तो जो बिल्कुल याद नहीं करते हैं वह है पापात्मा तमोप्रधान। जो याद करते हैं वह हो गये पूण्यात्मा सतोप्रधान। बहुत फर्क हो गया ना। घर में भल इकट्ठे रहते हैं परन्तु फर्क तो पड़ता है ना। इसलिये तो भागवत मे आसुरी नाम भी गाये हुये हैं। इस समय की ही बात है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं यह है ईश्वरीय चरित्र जो भक्ति मार्ग में गाते हैं। सतयुग में तो यह कुछ भी याद न रहेगा। सभी भूल जावेंगे। बाप अभी ही शिक्षा देते हैं। सतयुग में तो यह बिल्कुल ही भूल जाते हैं। फिर द्वापर में शास्त्र आदि बनाते हैं। और कोशिश करते है राजयोग सिखलाने की। परन्तु राजयोग तो सिखला न सके। वह तो बाप जब सम्मुख आते हैं तब ही आकर बतलाते हैं। तुम जानते हो कैसे बाप राजयोग सिखलाते हैं फिर 5000 वर्ष बाद आकर ऐसे ही कहेंगे मीठे2 रूहानी बच्चों। ऐसे कब भी कोई मनुष्य मनुष्य को कह न सके। न देवतायें देवताओं को कह सकते हैं। एक बार पार्ट बजाया फिर 5000 वर्ष बाद पार्ट बजावेंगे। क्योंकि फिर सीढ़ी उतरते हो ना। तुम्हारी बुधि में अभी आदि मध्य अन्त का राज है। जानते हो वह है शान्तिधाम अथवा परमधाम। हम आत्मायें भिन्न2 धर्मों के नम्बरवार वहां रहती हैं निराकारी दुनिया में। जैसे स्टार्स देखते हो ना कैसे खड़े हैं कुछ देखने में नहीं आता। ऊपर कोई चीज नहीं है जिसको पकड़ कर खड़े हैं। तुम आत्मायें भी ऐसे ही ब्रह्म में जाकर रहती हो। यह है आकाश तत्व। वह है ब्रह्म तत्व। यहां तो तुम धरती पर खड़े हो। यह है कर्म-क्षेत्र। हम आत्मा परमधाम से यहां आकर शरीर लेकर कर्म करती हैं। बाप ने समझाया है तुम जब मेरे से वरसा पाते हो तो 21 जन्म तुम्हारे कर्म अकर्म हो जाते हैं। क्योंकि वहां रावण राज्य होता ही नहीं। वह है ईश्व0 राज्य। जो अभी ईश्वर स्थापन कर रहे हैं। बच्चों को समझाते रहते हैं शिव बाबा को याद करो। स्वर्ग के मालिक बनो। स्वर्ग शिव बाबा ने स्थापन किया है। तो शिवबाबा और सुखधाम को याद करो। पहले2 शान्तिधाम को याद करो। तो चक्र भी बुधि में आवेगा। बच्चे भूल जाते हैं। इसलिये घड़ी2 सावधान करना पड़ता है हे बच्चों अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो मीठे2 बच्चों तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। प्रतिज्ञा करते हैं तुम याद करेंगे तो मैं तुम्हें पापों से मुक्त कर दूंगा। बाप ही पतित-पावन सर्वशक्तिवान अथार्टी है। उनको वर्ल्ड अथार्टी कहा जाता है। वह सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। वेदों शास्त्र आदि सभी को जानते हैं तब तो कहते हैं नालेज में कोई सार नहीं है। गीता में भी कोई सार नहीं है। भल वह सर्व शास्त्रमईशिरोमणी शास्त्र है, माई बाप है। बाकी सभी हैं बच्चे। जैसे पहले2 प्रजापिता ब्रह्मा है बाकी सभी हैं बच्चे। प्रजापिता ब्रह्मा को आदम कहते हैं। आदम माना आदमी। मनुष्य है ना। इनको देवता नहीं कहेंगे। एडम को आदम कहते हैं। भक्त लोग ब्रह्मा एडम को देवता कह देते। बाप बैठ समझाते हैं एडम अर्थात आदमी। डीटी है ना। न भगवान है न डीटिज्म है। यह ल0ना0 देवतायें हैं। डीटिज्म ही पैराडाईज है। नई दुनिया है ना। उसमें क्या2 है बाप ने समझाया है। वह है वन्डर आफ दी वर्ल्ड। बाकी तो वह सभी हैं माया के वन्डर्स। द्वापर के बाद माया के वन्डर्स होते हैं। रावण की वन्डर्स। ईश्वरीय वन्डर है हेविन। स्वर्ग जो बाप स्थापन करते हैं। अभी शुभ स्थापना हो रही है ना। बाप ने समझाया है अच्छे मे अच्छा वन्डर है यह दिलवाला मंदिर। परन्तु इनकी वेल्यु का किसको भी पता नहीं है। मनुष्य यात्रा करने जाते हैं ना तो वास्तव में सबसे अच्छा तीर्थ स्थान यह है। तुम लिखते हो ना ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय माउन्ट आबू। तो ब्राईवेट में यह भी लिखना चाहिए सर्वोत्तम तीर्थ-स्थान। क्योंकि तुम जानते हो सर्व की सदगति यहां से ही होती है। यह कोई को भी पता नहीं है। जैसे सर्वशास्त्रमई

शिरोमणि गीता है वैसे सर्वतीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ आबू है। तो मनुष्य पढ़ेंगे तो अटेन्शन जावेगा। सारी दुनिया के तीर्थों में यह है सबसे बड़ा तीर्थ। जहां बाप बैठ सभी की सद्गति करते हैं। तीर्थ तो बहुत हो गये हैं। गांधी के कब्र को भी तीर्थ समझते हैं। सभी जाकर वहां फूल चढ़ाते हैं। उनको तो कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चे तो जानते हो ना। तो तुमको यहां बैठे दिल अन्दर बहुत खुशी होनी चाहिए। हम हेवन की स्थापना कर रहे हैं। अभी बाप सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। पढ़ाई भी बहुत सहज है। कुछ भी खर्चा नहीं लगता है। तुम्हारी ममा को एक पाई भी खर्चा लगी? बिगर कौड़ी खर्चा पढ़कर इतना होशियार हो गई। नम्बरवन में गई। राजयोगी बने ना। आत्मा को राज्य मिलता है। आत्माओं को ही बाप बैठ पढ़ाते हैं। आत्माओं को ही राज्य मिलता है। जो गंवाया है। इतनी छोटीसी आत्मा कितना काम करती है। 84 जन्मों का पार्ट बजाती है। इतनी छोटी आत्मा में कितनी ताकत है। सारे विश्व पर राज्य करती है। इन देवताओं की आत्मा में कितनी ताकत है। हरेक धर्म में अपनी ताकत होती है। आत्मा में भी ताकत है तो शरीर द्वारा कर्म करती है। आत्मा ही आकर इस कर्म-क्षेत्र पर कर्म करती है। बुरे ते बुरा कर्तव्य है विकार में जाना। वहां यह बुरा कर्तव्य होता ही नहीं आत्मा विकारी मार्ग में जाती ही तब है जब कि रावण राज्य होता है। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। वह तो कह देते विकार सदैव है ही। तुम समझा सकते हो वहां रावण राज्य ही नहीं तो विकारी कैसे कह सकते। वहां है ही योगबल। भारत का राजयोग भी मशहूर है। बहुत सीखने चाहते हैं परन्तु जब तुम सिखलाओ। और तो कोई सिखला न सके। जैसे महर्षि था। कितनी मेहनत करता था योग सिखलाने के लिये परन्तु दुनिया थोड़े ही जानती है यह कैसे सिखलावेंगे। तुम्हारे समझाने का भी अभी समय नहीं है। समझो तुम कोशिश कर उनको बुलाते हो परन्तु वह कब समझेंगे नहीं। अगर समझ जाये तो अखबार में पड़ जावे ब्रह्माकुमारियों ने हमको आदि सनातन राजयोग सिखाया है जो हम भी सीख रहे हैं। ढेर के ढेर आ जाये। चिन्मयानन्द पास कितने जाते हैं। एक बार वह कह दिया कि सचमुच भारत का राजयोग सिवाय ब्रह्माकुमारियों के कोई समझा नहीं सकते हैं तो बस। परन्तु ऐसा कायदा नहीं है जो अभी ही आवाज हो। पहले तो सभी भागे बाबा के पास। परन्तु यहां क्या आकर करेंगे। किससे बात करेंगे। बाप तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियों पास जाओ। सेन्टर पर जाकर समझो। यहां क्या करेंगे। बाबा को थोड़े ही धमसान चाहिए। सभी थोड़ेही समझ सकेंगे। बड़ी मेहनत है। हां यह होगा पिछाड़ी में। कहते हैं ना अहो प्रभु! अहो शिव बाबा आप की लीला ... अभी तुम ही समझते हो। तुम्हारे सिवाय बाप को सुप्रीम बापसुप्रीम टीचर सुप्रीम सद्गुरु कोई समझते हो नहीं। यहां भी बहुत जिनको चलते2 समझते2 फिर माया हरा देती है हैरान कर देती है तो बिल्कुल बेसमझ बन पड़ते हैं। बड़ी मंजिल है। युध का मैदान है। इसमें माया बहुत ही विघ्न डालती है। वह लोग विनाश के लिये वहां तैयारी कर रहे हैं। तुम यहां इन 5 विकारों को जीतने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम विजय के लिये, वह विनाश के लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं। दोनो काम इकट्ठा होगा ना। यह तो तुम समझते हो अभी तो टाईम पड़ा है। हमारा राज्य थोड़ेही स्थापन हुआ है। राजाएं, प्रजा अभी बननी है। अभी तुम समझते हो आधा कल्प के लिये बाप से हमको वरसा मिलता है। बाकी मोक्ष तो कोई को मिलता ही नहीं। वह लोग भल कहते हैं फलाने ने मोक्ष को पाया। मरने बाद उनको थोड़ेही मालूम है कि कहां गया। ऐसे ही गपोड़ा मार देते हैं। तुम समझते हो शरीर छोड़ते हैं वह फिर दूसरा शरीर जरूर लेंगे। मोक्ष को पा नहीं सकते। ऐसे नहीं कहेंगे बुद बुदा पानी में लीन हो जाता है। अनेक मत वाले तुमको मिलेंगे। कहेंगे शास्त्र ऐसे कहते हैं, गुरु ऐसे कहते हैं। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सभी भक्ति मार्ग की सामग्री है। यह अभी तुम समझते हो। ऐसे कोई कह न सकेंगे भक्ति दुर्गति है। कोई कहे तो उनको आकर लगे। इसलिए तुमको भी ऐसे सीधा नहीं कहना है। भक्ति दुर्गति है। बोलो सबसे जास्ती भक्ति हमने की है। सबसे जास्ती शास्त्र हमने पढ़ी है। जास्ती भक्ति जिसने की है तो जास्ती फल भी उनको मिलेगा। वह हिसाब किताब बाप बैठ बतलाते हैं। यह है सभी डिटेल की बातें। तुम अभी सम्मुख सुनते हो। गरम गरम हलवा तुम खाते हो। —

सबसे जास्ती गरम हलवा कौन खाते हैं ? (ब्रह्माबाबा) यह तो बिल्कुल उनके बाजु में बैठे हैं। झट सुनते हैं और धारण करते हैं। फिर यही उच्च पद पाते हैं। सूक्ष्मवतन में भी, बैकुण्ठ में भी इनका ही सा० करते हैं। यहां भी इनको ही देखते हो इन आंखों से। बाप पढ़ाते तो सभी को हैं ना। बाकी यह है याद की मेहनत। याद में रहना जैसे तुमको कठिन लगताहै। वैसे इनको भी। इसमें कोई कृपा आदि की बात ही नहीं। बाप कहते हैं हमने लोन लिया है इनका हिसाब किताब दे देंगे। पुरुषार्थ तो बाकी इनको करना है ना। समझता भी हूं मेरे बाजु में बैठे हैं, बाप को हम याद करें फिर भी भूल जाता हूं। सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी पड़ती है। युध के मैदान में जो महारथी पहलवान होते हैं। जैसे हनुमान का मिसाल है तो इनकी ही माया ने परीक्षा ली क्योंकि वह महावीर था। जितना जास्ती पहलवान उतना ही जास्ता माया परीक्षा लेती है। तूफान जास्ती आते हैं। बच्चे लिखते हैं बाबा हमको यह यह होता है बाबा कहते हैं यह तो सभी को होगा। पहलवान से कुस्ती जास्ती लड़ेगी। जास्तीक्रिमनल आई में ले जावेंगी। माया किसको भी छोड़ने वाली नहीं है। पहलवान से और भी मलयुध करतीहै। छोटा सा दीवा तो ऐसे करने से ही झट बुझ जावेगा। तो बाबा रोज समझाते हैं खबरदार रहना। माया रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ेगी। लिखते हैं बाबा माया बहुत ही तूफान में ले आती है। कोई देहअभिमानी होते हैं तो बाबा को बतलाते नहीं हैं। बहुत अच्छे2 फर्स्ट क्लास ... इनके लिये कहते हैं तो दूसरे को थोड़ेही छोड़ेगा। तुम अभी बहुत अकलमन्द बनते हो। मनुष्य तो जैसे टटू हैं। इसलिये रावण के ऊपर गदहे दिखाये जाते हैं। टटू बुध से अभी तुम देवी बुधि बनते हो। आत्मा पवित्र होने से फिर शरीर भी पवित्र मिलता है। आत्मा कितना चमत्कारी हो जाती है। पहले तो गरीब ही उठाते हैं। बाप भी गरीबनिवाज गाया हुआ है। बाकी तो वह लोगदेरी से आवेंगे। तुम समझते हो जबतक भाई बहन न बनें हैं तो भाई2 कैसे बनेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान तो बहन भाई ठहरे ना। फिर बाप समझाते हैं भाई2 समझो। यह है पिछाड़ी का सम्बन्ध। फिर ऊपर भी भाईयों से जाकर मिलेंगे। फिर सतयुग में नया सम्बन्ध शुरु होगा। वहां जास्ती सम्बन्ध आदि नहीं होते। सम्बन्ध बहुत ही हलका होता है। फिर बढ़ जाता है। अभी तो बाप समझाते हैंभाई बहन भी नहीं। भाई2 समझना है। सब नाम रूप से भी निकल जाना है। बाप भी भाईयों(आत्माओं) को पढ़ाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा है तब भाई बहन हैं। कृष्ण तो खुद ही बच्चा है। वह कैसे बहन भाई बनावेंगे। गीता में भी यह बातें नहीं हैं। यह है बिल्कुलनया ज्ञान। ड्रामा में सभी नूंध है। एक सेकण्ड का पार्ट न मिले दूसरे सेण्ड से। बाकी आठ वर्ष है। किस= कितने मास, कितने दिन कितने घंटे कितने मिनट कितने सेकण्ड और पास होनी है। फिर 5000 वर्ष बाद ऐसे ही पास होंगे। कम बुधि वाले तो इतना धारण कर न सके। तब बाप कहते हैं यह तो बहुत ही सहज है। अपने को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करो। पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूं जब कि संगम है। तुम ही देवी देवताएं थे। यह जानते हो जब इनका राज्य था तो और कोई धर्म न था। अभी तो इन्हों का राज्य है नहीं। फाउंडेशन है नहीं। बाकी सभी अनेक धर्म खड़े हैं। एक आदिसनातन देवी देवता धर्म है नहीं। बाकी यह चित्र जाकर रही है। उसमें भी मुख्य चित्र ल०ना० का है। बराबर नर से ना० बनने को हो क्या सुनते हैं। ल०ना० का राज्य था जो अभी नहीं है। अभी फिर बाप हुये हैं। तो तुम इस नालेज से नर से नारायण बनते हो। इन्होंने भी इस नालेज से ही यह पद पाया है। तुम इन सभी देवी देवताएं की बायोग्राफी को जीवनकहानी को जान गये हो। तुम जानते हो यह सुखधाम के मालिक थे। 84 जन्मों का चक्र लगाकर अभी अन्त में है फिर जावेंगे सुखधाम में। तो अभी बाप को याद करो। जिससे बेहद का वरसा मिलता है। वह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। बाप से वरसा जरूर मिलेगा। पढ़ाई है, फिर जितना जो पुरुषार्थ करें। पावन बनेंगे तो बाप साथ ले जावेंगे। और कोई गुरु गुसाई तो साथ नहीं ले जाते हैं। गुरु खुद ही चले जाते हैं। शिष्य तो यहां ही रह जाते हैं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। नमस्ते।